भक्तिविकास स्वामी द्वारा प्रथम दीक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यकताएँ

जो दीक्षा का महान वर प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें उनके ऊपर किए जाने वाले विश्वास को अपनी गम्भीरता से उचित सिद्ध करना है। दीक्षा के कम से कम एक वर्ष पूर्व से उम्मीदवार को :

1. चार नियमों का कठोरता से पालन करना चाहिए। गृहस्थ भक्तों के लिए इसकी पुष्टी वरिष्ठ गृहस्थ भक्तों द्वारा की जानी चाहिए।

2. हरे कृष्ण महामन्त्र की कम से कम सोलह माला प्रतिदिन जप करना चाहिए। जप की गुणवत्ता की जाँच की जानी चाहिए। अस्पष्ट जप अथवा कोई ऐसा स्वर जो महामन्त्र के समान लगता हो अस्वीकार्य है।

3. श्रील प्रभुपाद के आदेशों, उनके आंदोलन के प्रति तथा भक्तिमय सेवा को जीवन भर पालन करने के प्रति समर्पित होना।

4. यह विश्वास होना कि भक्तिविकास स्वामी परम्परा के अधिकृत प्रतिनिधि हैं तथा वे उम्मीदवार को भगवद्धाम लौटने के पथ पर निर्देश देने में सक्षम हैं। सचेत रहें क्योंकि कई व्यक्ति उन्हें रूढ़िवादि तथा कट्टरपन्थी मानते हैं। तलाक, स्त्रीयों की तथाकथित स्वतंत्रता तथा ऐसे अनेक विवादित मुद्दों पर उनकी कठोर आपत्ति को स्वीकार करने के लिए तैयार रहें। उनसे श्रवण करने, उनकी आज्ञापालन करने, उनसे मार्गदर्शन लेने, उनके द्वारा निर्देशित किये जाने तथा सम्भवतया उनके द्वारा दण्ड-शोधन किये जाने के लिए तैयार रहें।

5. इस्कॅान के अधिकारीयों के साथ सहयोग की भावना रखें।

6. मंदिर के अथवा नाम-हट्ट के कार्यक्रमों में भाग लें, यदि मंदिर से बहुत दूर रहते हों तब ही भाग न लें, इस स्थिति में साधना घर पर सम्पन्न करें। गृहनिवासी भक्त, जो प्रतिदिन प्रवचन में उपस्थित नहीं रह सकते उन्हें नियमित रूप से मंदिर के प्रवचन, भक्तिवृक्ष अथवा इस प्रकार के किसी अन्य प्रवचन में सप्ताह में कम से कम एक बार भाग लेना चाहिए, साथ ही साथ उन्हें श्रील प्रभुपाद अथवा किसी इस्कॅान भक्त के प्रवचन कैसेट सुनना चाहिए, अथवा उन्हें प्रतिदिन श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

7. इस्कॅान के सभी दीक्षा देने वाले गुरुओं का सम्मान करना चाहिए।

8. वैष्णवों की सेवा करने के लिए विनम्र भाव रखना चाहिए तथा उनके साथ सौहाद्रपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। गलती निकालने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

9. कृष्णभावनामृत दर्शन का मूल ज्ञान होना चाहिए। यदि शिक्षित हों तो कृष्णभावनामृत प्रबोधिनी, भगवद्‌गीता यथारूप, आत्मसाक्षात्कार का विज्ञान, भक्तिरसामृत सिन्धु तथा श्रीमद्‌भागवतम् के प्रथम दो स्कंध पढ़े हुए होना आवश्यक है।

10. केवल कृष्ण प्रसाद ग्रहण करने के लिए दृढ़निश्चित होना चाहिए तथा कर्मी भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए।

11. टी.वी. नहीं देखना चाहिए, बाज़ारु भजन कैसेटों को नहीं सुनना चाहिए, मायावादियों अथवा असंगत भक्तों की पुस्तकों को नहीं पढ़ना चाहिए, भौतिकतावादी खेलों में संलग्न नहीं होना चाहिए, ना ही सिनेमा जाना चाहिए।

12. यदि मंदिर निवासी हों तो प्रातः चार बजे तक उठ जाना चाहिए। गृहनिवासी भक्त जिन्हें जीविकोपार्जन के लिए देर रात तक जागना पड़ता हो उन्हें प्रातः बहुत देर तक नहीं सोना चाहिए। जो नियमित रूप से पाँच बजे के बाद जागते हों उन्हें अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करना चाहिए।

13. मंदीर आने के समय अथवा भक्ति के कार्यक्रमों में भाग लेते समय गृहनिवासी भक्तों को यथासम्भव वैष्णव वेशभूषा धारण करना चाहिए। पुरुषों को धोती धारण करना चाहिए तथा स्त्रियों को साड़ी धारण करना चाहिए। पुरुषों को दाड़ी अथवा मूँछ नहीं होना चाहिए। विधवा स्त्रियों को छोड़कर अन्य स्त्रियों को केश गूँथना चाहिए तथा उन्हें काटना नहीं चाहिए।

14. यदि मंदिर निवासी हो तथा विवाहित न हो तो आर्थिक पारिश्रमिक ग्रहण नहीं करना चाहिए।

15. इस्कॅान के अन्य नियमों का पालन करें।

गृहनिवासी भक्तों को कम से कम एक अधिकृत वरिष्ठ भक्त के मार्गनिर्देश के अन्तर्गत कार्य करना चाहिए जो उनकी प्रगति पर ध्यान रखे।

गृहनिवासी भक्त जिनके गृह का वातावरण भक्तिमय सेवा के लिए अनूकूल नहीं हो उन्हें गम्भीरता से चिन्तन करना चाहिए कि यदि वे जीवनभर समर्पित रह पाऐंगे अथवा नहीं। कठिन पारिवारिक स्थितियों के कुछ सामान्य उदाहरण—दिन भर तथा देर रात तक ऊँची आवाज में टी.वी चलना; परिवारजन जो कृष्णभावनामृत के विरोधी हों; पत्नी अथवा पति जो कृष्णभावनाभावित गृहस्थ जीवन के नियमों का पालन नहीं करना चाहते हों।

एक अविवाहित युवक जो इस्कॉन आश्रम में ब्रह्मचारी के रूप में निवास नहीं कर रहा हो अथवा ऐसा नहीं करना चाहता हो उसे यह विश्वास होना चाहिए कि वह केवल किसी भक्त स्त्री के साथ ही विवाह करेगा और यह कि उसके सम्बन्धियों से किसी भी प्रकार के विरोध की आशंका नहीं हो। पाश्चात्य देशों की स्त्रीयों के लिए भी यही नियम हैं। भारतीय अविवाहित स्त्रियों को तभी दीक्षा लेना चाहिए जब उनके माता-पिता किसी दीक्षित भक्त से उनका विवाह करवाने को सहमत हों।

साठ वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिए नियमों में शिथिलता दी जा सकती है। उनके लिए मुख्य योग्यता है केवल सोलह माला का जप तथा चार नियमों का पालन। उन्हें मंदिर के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, और दर्शन का अल्प ज्ञानी होना स्वीकार्य है। जिन माताओं के युवा शिशु हों उनके लिए भी थोड़ी शिथिलता की जाएगी, क्योंकि यह समझा जा रहा है कि गृहकार्य उनके द्वारा मंदिर के कार्यक्रमों में भाग लेने में बाधा हो सकते हैं।

परन्तु सभी उम्मीद्वारों को पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं तथा भगवान् चैतन्य ही कृष्ण हैं। यह जाँच की जानी चाहिए कि उम्मीद्वार इन भ्रांतियों से पूर्णतया मुक्त हैं :

- जीव और भगवान् एक समान हैं
- गुरु ही भगवान् हैं
- शरीर त्यागने के पश्चात आत्मा भगवान् में विलिन हो जाता है
- पुण्य और भक्ति एक समान हैं
- मायावादी तथा ढोंगी अवतार निरपराध सन्त हैं; हमें उनकी भर्त्सना नहीं करना चाहिए
- समाज सेवा भगवन्नाम जप से श्रेष्ठ है

— — — — — —

ये नियम हतोत्साहित करने अथवा भयभीत करने के लिए नहीं हैं परन्तु गम्भीर उम्मीद्वारों को उस स्तर तक उठाने के लिए हैं जिससे उनकी दीक्षा वास्तव में उन्हें भक्तिमय सेवा में गम्भीरता से प्रगति करने का धरातल बने। जो व्यक्ति इस स्तर तक आने के लिए सहमत नहीं हों उन्हें भक्तिविकास स्वामी द्वारा दीक्षा देने के लिए प्रस्तुत न करें।

भक्तिविकास स्वामी द्वारा ब्राह्मण दीक्षा प्राप्त करने के लिए आवश्यकताएँ

1. उपरोक्त सभी नियमों का प्रथम दीक्षा के बाद दो वर्ष तक पालन किया गया हो।

2. आदर्श साधना तथा व्यवहार का पालन किया हो।

3. सेवा करने की दृढ़ इच्छा होनी चाहिए। अनर्गल बात करने अथवा समय व्यर्थ करने की प्रवृत्ति से मुक्त होना चाहिए।

4. या तो (अ) भक्ति शास्त्री डिग्री प्राप्त की हो; अथवा (ब) श्रीमद्‌भागवतम् के सभी बारह स्कन्ध तात्पर्यों के साथ पढ़े हों तथा ब्राह्मण दीक्षा के लिए निर्धारित परीक्षा में सफलता प्राप्त की हो; यदि अशिक्षित अथवा अल्प शिक्षित हों तथा श्रीविग्रह की सेवा करना चाहते हों तो सेवा की आदर्श भावना होना चाहिए।

5. प्रचार, शिक्षण अथवा श्रीविग्रह की सेवा में संलग्न होना चाहिए।

6. उन पुरुषों को प्रथम दीक्षा के साथ ब्राह्मण दीक्षा दी जा सकती जिनका स्मार्त उपनयन संस्कार हो चुका हो और जो नियमित रूप से गायत्री जप कर रहे हों। यह दीक्षा उनके किसी विशेष स्तर पर होने का सूचक नहीं है, वरन् स्मार्त आस्क्तियों से उनकी रक्षा के लिए है।